मान्यवर कांशीराम: समतामूलक समाज, संगठनात्मक-प्रतिनिधित्त्व आधारित नेतृत्त्व और बहुजन चेतना के अमर दीप

डॉ. विनोद कुमार*
*सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी-221002 (उत्तर प्रदेश), भारत
दूरभाष: 7985589494, 9838424777
ई-मेल: dr.vinodpal777@gmail.com
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17331718
Accepted on: 30/09/2025 Published on: 10/10/2025

स्वतंत्र भारत के सामाजिक-राजनीतिक इतिहास में यदि किसी एक व्यक्ति ने वंचित, शोषित और उपेक्षित समाज को आत्मगौरव का बोध कराया तो बिना किसी विकल्प के वह एक व्यक्ति **'मान्यवर कांशीराम'** जी हैं। वे केवल एक नेता नहीं थे बल्कि **'दलितों-वंचितों-शोषितों के सामाजिक-राजनीतिक आत्मसम्मान'** की सबसे अधिक प्रभावशाली क्रांति के प्रणेता थे। उनकी 19वीं पुण्यतिथि पर जब हम उन्हें भावनात्मक रूप से स्मरण कर रहे हैं तो यह केवल विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करना मात्र नहीं है, बल्कि उन्हें सादर नमन करते हुए उनके संघर्षों, संकल्पों और आदर्शों को अपने जीवन में धारण करके समतामूलक समाज के निर्माण हेतु वंचितों-शोषितों की आवाज बनने की प्रेरणा और दृढ़ संकल्पित होना भी है। इसलिए प्रिय युवाओं! उनकी पुण्यतिथि के इस अवसर पर उनके संघर्षों को हमेशा याद रखना, शोषितों-वंचित की आवाज बनना और समाज में समतामूलक न्याय-व्यवस्था की स्थापना करने हेतु आजीवन प्रयासरत रहने हेतु संकल्प लेना, बहुजन क्रान्ति के जनक मान्यवर कांशीराम जी को याद करने का सबसे सार्थक तरीका है। मान्यवर जी का मानना था कि **'जो समाज अपने हक के लिए लड़ना नहीं जानता, उसे कोई उसका हक नहीं देता'। इसलिए अपने हक-हुकूक के लिए लड़ना-संघर्ष करना आज की युवा पीढ़ी को सीखना होगा। सनद रहे, 'अपने हक के लिए लड़ना-संघर्ष करना'** मान्यवर जी के जीवन का सार है। यह हमारे-आप के लिए 'प्रेरणा और चेतावनी' दोनों एक साथ है। क्योंकि यदि अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं रहोगे और लड़ोगे नहीं तो तुम्हारे हिस्से का कोई और खाता रहेगा तथा तुम्हारा शोषण होता रहेगा। तुम शोषण को नियति मानकर शोषितों-वंचितों का जीवन जियोगे और शोषणकर्त्ता नियमों-क़ानूनों को धता बताते रहेंगे। इसलिए बहुजन नायकों की ऐतिहासिक परंपरा के शीर्ष विद्वानों और नेतृत्वकर्त्ताओं के जीवन संघर्ष के बारे में खूब पढिए; और उनसे प्रेरणा लेकर अपने अधिकारों के लिए संगठित प्रयास कीजिए। क्योंकि बिना संगठनात्मक नेतृत्व के प्रयास उतना फलदायी नहीं होगा, जितना कि एक समतामूलक समाज के निर्माण हेतु आवश्यक है। अतः संगठित होकर संवैधानिक मूल्यों और आदर्शों को ज़मीनी हकीकत बनाने के लिए मान्यवर जी ने जो सपना देखा था, उसे पूरा कीजिए।

मान्यवर जी ने अपनी संपूर्ण ऊर्जा उस समाज को जगाने में लगाई, जिसे सदियों से जाति, धर्म और वर्ण व्यवस्था ने 'दलित-पिछड़ा-अछूत' जैसे संबोधनों सहित मुख्यधारा के समाज से बाहर रखा। बाहर रखने से कार्यकारी व्यवस्था बिगड़ी तो उन्हें मुख्यधारा के समाज में सबसे निचले पायदान पर रखकर एक मकड़जाल में उलझा दिया गया था। उन्हें बताया गया कि कुछ निकृष्ट कार्य केवल उन्हें ही संपादित करने होंगे। लेकिन मान्यवर जी ने उनके लिए 'बहुजन' शब्द को नये अर्थ में परिभाषित किया— उनके लिए 'बहुजन' शब्द एक ऐसी पहचान को अर्थापित करता है, जो समाज के 85 प्रतिशत वंचितों-शोषितों की सामूहिक चेतना का स्वर बन जाता है।

भेदभाव का जीवंत अनुभव और बदलाव का सार्थक प्रयास:

पंजाब के खवसपुर (जनपद-रूपनगर) के एक दलित परिवार में जन्में कांशीराम ने प्रारंभिक जीवन में ही सामाजिक विषमता का विषपान किया। आगे चलकर सरकारी नौकरी वाले कार्य-स्थलों पर जातिगत भेदभाव आधारित कार्य-संस्कृति का दुखद अनुभव किया, जो उनके अन्तर्मन में एक धधकती ज्वाला बन गया। अन्तर्मन की यह ज्वाला सामाजिक भेदभाव को मिटाने की संकल्प के रूप में प्रस्फुटित हुई और उन्होंने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य '**बहुजन समाज की मुक्ति**' बना लिया। उनका मानना था कि जो भेदभाव हम झेल रहे हैं, वह आगामी पीढ़ी को न झेलना पड़े। इसीलिए अपने जीवन के इस सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु आजीवन संघर्ष करते रहे। **उनको यह एहसास हो गया था या यूं कह लें कि उन्होंने अपने समय की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर यह आकलन कर लिया था कि बिना सत्ता में भागीदारी के सामाजिक न्याय की संकल्पना अधूरी रह जाएगी।** इसीलिए उन्होंने '**संगठन से आंदोलन**' और '**आंदोलन से सत्ता**' तक की यात्रा करने के लिए सभी को प्रेरित किया। उन्होंने 1971 में '**बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज एम्प्लॉइज फेडरेशन' (बामसेफ)** की स्थापना की। बामसेफ शासकीय सेवाओं में कार्यरत वंचित वर्ग के लोगों को संगठित करने का एक क्रांतिकारी प्रयास था। यह संगठन जाति से ऊपर उठकर बहुजन एकता का प्रतीक बन गया। इसके बाद उन्होंने '**दलित शोषित समाज संघर्ष समिति' (DS4***)* बनाई, जिसका नारा था- **"जो समाज संगठित नहीं, वह गुलाम है।"** इसी संगठनात्मक चेतना से 1984 में उन्होंने **'बहुजन समाज पार्टी' (बसपा)** की स्थापना की। उनका बहुत स्पष्ट मानना था कि बसपा एक ऐसी राजनीतिक पार्टी है, जो केवल चुनाव जीतने के लिए नहीं, बल्कि **सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक न्याय और समतामूलक समाज की स्थापना हेतु प्रेरणापुंज और ध्वजवाहक** बनेगी। उनका कहना था कि **'हम सत्ता के भूखे नहीं हैं, पर हम सत्ता से बाहर नहीं रह सकते'। क्योंकि** हमारी राजनीति, **'बहुजन मुक्ति'** की राजनीति है।

संगठन आधारित राजनीति: सामाजिक परिवर्तन का त्रि-स्तरीय मॉडल

मान्यवर जी ने अपने जीवन संघर्षों में **'राजनीति को साध्य कभी नहीं माना'। उन्होंने राजनीति को हमेशा सामाजिक परिवर्तन का साधन माना।** वे जानते थे कि केवल सामाजिक सुधार आंदोलनों से बराबरी नहीं मिलेगी और न ही गांधीजी का नैतिक परिवर्तन वाला दर्शन शोषकों का मन बदल पाएगा। क्योंकि शोषक वर्ग कभी भी सामाजिक न्याय की भावना-संकल्पना को अपने गले के नीचे उतरने नहीं देता है। वह हमेशा अपने अनुकूल नीति का निर्माण और क्रियान्वयन करता है। शोषण को व्यवस्था (सिस्टम) का अंग बनाकर प्रस्तुत करता है। फिर सिस्टम के संचालन हेतु संवैधानिक रूप से चुने गए लोग संवैधानिक आदर्शों और संकल्पों के आधार पर कार्य करने के बजाय अपनी सोच, वैचारिकी और लॉबी को ध्यान में रखते हुए यह पुरजोर कोशिश करते हैं कि शोषण आधारित व्यवस्था या तो यथावत बनी रहे या बदले हुए स्वरूप में समाज और सरकारी संस्थाओं में फलती-फूलती रहे। इसलिए **जब तक बहुजन समाज नीति-निर्माण की प्रक्रिया में भागीदार नहीं बनेगा, तब तक सामाजिक परिवर्तन अधूरा रहेगा।** वास्तव में मान्यवर साहब की यह मान्यता **'संवैधानिक मूल्यों और आदर्शों'** को जमीन पर उतारने का बहुत ही दूरदर्शी संकल्प था। उनका हर एक कदम दूरदृष्टि और सामाजिक न्याय आधारित नेतृत्व का परिचायक था। वे कहते थे कि **'पहले संगठन बनाओ, फिर आंदोलन खड़ा करो, और अंत में सत्ता हासिल करो। तब जाकर समाज बदलेगा'।** मान्यवर साहब की यह तीन स्तरीय रणनीति आज भी सामाजिक आंदोलनों के लिए पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाता है, जोकि प्रत्येक देश-काल-परिस्थिति में संवैधानिक रूप से सामाजिक परिवर्तन के लिए सबसे सरल और सफल रणनीति है। बशर्ते कि इसका प्रयोग ईमानदारी और सामूहिक लक्ष्यों के लिए होना चाहिए। मान्यवर साहब का आंदोलन एक ऐसी मशाल बना, जिसने न केवल उत्तर भारत में बल्कि पूरे देश में वंचित-शोषित समाज के भीतर **'हम भी कुछ हैं'** का आत्मविश्वास जगाया। वंचित वर्ग की सोई हुई आत्मा को जगाकर उन्हें सामाजिक परिवर्तन हेतु प्रेरित किया।

वर्तमान सामाजिक-राजनैतिक संदर्भ और मान्यवर साहब की प्रासंगिकता:

आज जब भारतीय समाज में जातीय और धार्मिक विभाजन और श्रेष्ठता की दंभकारी रेखाएँ और गहरी होती जा रही हैं, तब मान्यवर साहब की वैचारिकी और अधिक ज्वाला के साथ पुनः प्रासंगिक हो उठती है। चाहे बात सामाजिक-सांस्कृतिक पिछड़पन की बात हो या राजनीतिक और शैक्षिक रूप से दलितों-पिछड़ों-वंचितों के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की हो। आज भी दलितों-पिछड़ों-वंचितों के संविधान प्रदत्त अधिकारों, सामाजिक बराबरी, कार्यस्थल पर समता आधारित न्याय एवं व्यवहार, शैक्षिक संस्थानों में पक्षपात रहित प्रवेश, जाति और लिंग आधारित भेदभाव एवं शोषण, पर्याप्त राजनीतिक

प्रतिनिधित्व और सरकारी जॉब में पारदर्शिता जैसे मुद्दों पर काम करने की जरूरत है। उक्त मुद्दों को संवैधानिक तरीके से हैंडल करने के लिए और ज़मीनी हकीकत में वास्तविक परिवर्तन की प्राप्ति के सुनिश्चयन हेतु मान्यवर साहब का त्रि-स्तरीय मॉडल बेहद प्रासंगिक दिखायी पड़ता है। उन्होंने सिखाया था कि **'विभाजन में नहीं, एकता में शक्ति है'।** उनका लक्ष्य **'किसी जाति या वर्ग को श्रेष्ठ बनाना'** नहीं था, बल्कि **'सामाजिक न्याय की ऐसी व्यवस्था स्थापित करना था जहाँ सभी को सम्मानपूर्वक समान अवसर मिले'**। वर्तमान राजनीति में जहाँ नैतिकता और मूल्य धीरे-धीरे क्षीण हो रहे हैं, साहब की सोच हमें याद दिलाती है कि सत्ता का अर्थ केवल शासन नहीं, बल्कि **'सेवा और सामाजिक परिवर्तन'** है।

युवाओं के लिए प्रेरणा का शीर्ष प्रकाश-पुंज:

मान्यवर साहब का जीवन दर्शन इस बात का जीता-जागता उदाहरण है कि **जब कोई व्यक्ति समाज के लिए जीने का संकल्प लेता है तो इतिहास उसका नाम अमर कर देता है**। इसलिए युवा पीढ़ी के लिए उनका जीवन एक **'आदर्श पाठशाला'** है और **'उनकी वैचारिकी'** एक **'आदर्श दर्शन'**। साहब के जीवन रूपी पाठशाला में प्रवेश लेकर उनके दर्शन का आत्मसात करने वाला व्यक्ति समतामूलक समाज की स्थापना का **'शीर्ष मंत्र'** प्राप्त करता है। युवाओं को समझना होगा कि मान्यवर जी का **'समतामूलक समाज की स्थापना रूपी मंत्र'** वास्तव में भारतीय संविधान का शीर्ष लक्ष्य है। सनद रहे, भारतीय संविधान की उद्देशिका में सम्मिलित न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता जैसे महान उद्देश्यों की वास्तविक प्राप्ति एवं सतत पहुँच जब तक समाज के आखिरी व्यक्ति तक नहीं हो जाती है, तब तक समतामूलक समाज की स्थापना सुनिश्चित नहीं हो सकेगी। इसी समतामूलक समाज की स्थापना के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सभी युवाओं को एकजुट होकर संवैधानिक तरीके से प्रयास करना चाहिए। दरअसल समतामूलक समाज, सामाजिक न्याय आधारित एक ऐसी व्यवस्था की संकल्पना है, जिसमें किसी के साथ भी, किसी भी तरह का कोई भेदभाव कभी भी नहीं किया जाएगा। अपनी कौशल, कार्यक्षमता और विवेक के आधार पर भले ही कोई बड़ा तो कोई छोटा हो, लेकिन जाति-धर्म-लिंग-क्षेत्र-भाषा इत्यादि के आधार पर कोई बड़ा या छोटा नहीं होगा। इसलिए मान्यवर साहब को याद करने का एक सबसे उत्तम तरीका उनके विचारों-दर्शनों को याद रखना होना चाहिए। युवाओं के लिए उनके सामाजिक-राजनैतिक दर्शन को उनके ही एक प्रेरणादायी कथन से समझा जा सकता है कि **'परिवर्तन केवल नारों से नहीं; संघर्ष, संगठन और समर्पण से आता है'।** वे अक्सर कहा करते थे कि **'जब तक बहुजन समाज में राजनीतिक चेतना नहीं आएगी, तब तक उसके जीवन में परिवर्तन नहीं आएगा'।** इसलिए वर्तमान समय में हताश-निराश युवाओं को उनके विचारों से यह सीखना चाहिए कि

'सभी अपनी पहचान पर गर्व करें'; 'सामाजिक अन्याय के विरुद्ध खड़े हों'; और 'लोकतंत्र को मजबूत बनाने में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएँ'।

सभी युवाओं को उनके कथन **'मैं हार मानने के लिए नहीं, जीतने के लिए पैदा हुआ हूँ'** पर शत-प्रतिशत विश्वास करना चाहिए। इस वाक्य को अपने मनस पटल पर भीतर सबसे अधिक सुरक्षित स्थान पर सुशोभित रखना चाहिए। ताकि प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में मन से यही उच्चारित हो कि **'मैं हार मानने के लिए नहीं, बल्कि जीतने के लिए पैदा हुआ हूँ'।** मान्यवर साहब का यह वाक्य आज के हर युवा के लिए प्रेरणा का एक अद्वितीय प्रकाश-पुंज है। जब असफलता, भेदभाव और पक्षपातपूर्ण व्यवहार हमें निराश करें, तो यह सदैव याद रखना चाहिए कि **'संघर्ष ही सफलता की कुंजी है'** और **'मैं आखिरी साँस तक संघर्ष करूंगा'**; **हार नहीं मानूँगा** क्योंकि **'मैं जीतने के लिए पैदा हुआ हूँ'**...

हम युवाओं को यह भी समझना होगा कि उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि 'एक व्यक्ति भी यदि स्पष्ट उद्देश्य और अटूट संकल्प के साथ खड़ा हो जाये, तो पूरे समाज की दिशा बदल सकता है'। इस विश्वास के साथ उन्होंने सत्ता के केंद्र में उन लोगों को पहुँचाया, जिन्हें सदियों तक दरकिनार किया गया था। वे सच्चे अर्थों में **लोकतंत्र के पुनर्निर्माता** हैं। उनकी प्रेरणा से बहुजन समाज में यह विश्वास जगा कि 'हम भी नेतृत्व कर सकते हैं, हम भी नीति बना सकते हैं और हम भी राष्ट्र-निर्माण में बराबर के भागीदार हैं'। आज का भारत, जो समावेशी विकास की बात करता है, वास्तव में वह तभी सशक्त होगा जब बहुजन समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार, समान अवसर और समान सम्मान मिलेगा। तब जाकर मान्यवर साहब का खुली आँखों से देखा गया सपना साकार होगा।

निष्कर्षतः उनकी आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके संदेश को आगे बढ़ाएँ और यह दोहराएँ कि **'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'- यही हमारा धर्म है।** आज के दिन हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उन्होंने बहुजन आंदोलन को केवल राजनीतिक स्वर नहीं दिया, बल्कि इसे 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' से भी जोड़ा। उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों को जन-जन तक पहुँचाया और कहा कि **'अंबेडकर ने जो सोचा था, उसे मैं पूरा करूँगा'।** ऐसी सोच को सलाम करते हुए हम सभी भारतवासियों को अपने देश को एक समतामूलक समाज के रूप में विश्व पटल पर एक मिसाल के तौर पर प्रस्तुत करने की दिशा में सच्चे मन से प्रयास करना चाहिए। यही मान्यवर कांशीराम जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मान्यवर कांशीराम अमर रहें! जय हिन्द, जय भारत, वन्देमातरम्।